है छिपा जीवन सार...शब्दों में

जश्न सजे सिर्फ गुलदस्ता-ए-शब्दों से,
अनकहे शब्द कह जाए जीवन सत्य
इन्हीं में छिपे है, जिन्दगी राज-रस्में
'जीवन उत्सव' निर्मित इनके दम पर
अभिलाषा भार तो कामयाबी सेहरा भी,
अनकहे भी खींचें लकीरे, छोड़े सीख।

मिटे गिलें शिकवे, शुक्रिया इन्हीं से
वर्तमान आनंद में ही है जीवन सार,
जन्म से मृत्यु तक अक्षरों से है बंधा,
जादुई ढाई अक्षर स्नेह तो भाग्य भी,

यही तो है जो दिल को दिल से जोड़े
आशिक़ और आशिकी परिभाषित करें
रिश्तों की अहमियत शब्द ही जाने,
शब्द भाषाओं में भावनाओं के सार में।

शब्द पहेलियां भी बहुत कुछ कहे जाए
शब्दों की ताकत समझे न ले हलके में
इनमें युद्ध ललकार तो फटकार भी है
कभी मरहम बनकर घाव यह सहलाए।

सुर शब्दों में डालें तो मधुर गीत बने,
घुंघरू की झंकारे घोले मिश्री कानों में,
नवरस भाव बिन अक्षर रहे सब फीके,
इसकी ताकत को जाने न ले हलके से

शब्दों में ही छुपा है ईश्वर का स्वरूप
रचाए गीता रामायण, कुरान, बाइबिल
करें प्रार्थना, नमस्कार आशीर्वाद भी दे,
जीवन आधार यही, है सृष्टि का मूल।

न ले हलके से, अमृत का भंडार यही,
उतार-चढ़ाव दिखाए, तो सोच दिशा भी,
संकल्पों में ऊर्जा रंग भी शब्द ही भरें,
फूलों की नहीं रोज शब्दों की वर्षा करें,
ऐसी है इसकी दुनिया निराली अद्भुत।

शब्दों का मोल जीवन में जानें...

गीतांजली सक्सेना 2023